International Journal of
Global Multidisciplinary Research and Analytics

IJGMRA | ISSN (Online): 3107-6483
July-September 2025 | Vol. 01 | Issue 2

Website: www.thearyapublication.com

गोविन्द मिश्र: वृद्ध विमर्श एक आलोचनात्मक दृष्टि

माण्डवी गुप्ता*

*शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना (म०प्र०), भारत
ई-मेल: d.k.sahu1237@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17313774
Accepted on: 20/09/2025 Published on: 10/10/2025

वर्तमान समय में साहित्य में अनेक विमर्श उभर कर सामने आ रहे हैं। हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श,विकलांग विमर्श, किन्नर विमर्श, आदिवासी विमर्श इत्यादि विमर्श सामने आ चुके हैं। अब एक नया मुद्दा विमर्श के दायरे में लाया जा रहा है वह है वृद्ध विमर्श। हिन्दी उपन्यासों में वृद्धों की समस्याओं को वृद्ध विमर्श के रूप में उठाया जा रहा है। वृद्ध का शाब्दिक अर्थ है- परिपक्व या पका हुआ। अर्थात् जो अपने जीवन के ज्ञान और अनुभव को संगृहीत करके परिपक्व हो गया है। विमर्श के लिए अंग्रेजी के consultation शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसका तात्पर्य बहस, सलाह, परामर्श, सलाह, संवाद एवं सोच-विचार कर वास्तविकता का पता लगाना होता है। भारतीय संस्कृति में परिवार समाज की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। वृद्ध या बुजुर्ग उस परिवार रूपी महत्त्वपूर्ण इकाई का मेरुदंड है। हमारे समाज मे वृद्धजन या वरिष्ठजन ही संस्कृति एवं संस्कारों को समाज में प्रचार-प्रसार करते रहे हैं। हमारे शास्त्र भी बुजुर्गों के आदर एवं सम्मान गाथाएँ कहते हैं। वृद्धजनों के सम्मान में संत तथा ऋषि भी अपनी वाणी को मुखरित करते रहे हैं। वेद-पुराण भी इनकी गाथाएँ गाते नहीं थकते। यजुर्वेद कहता है-

“यदापि पोश मातरम् पुत्रः प्रभुदितो ध्यान्

इतदगे अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ ममां॥”१

जब वे सामाजिक भूमिकाओं को निभा चुके होते हैं तब पीढ़ी का अन्तर बताकर घर परिवार के लोग उनकी बातों को नकारने लगते हैं तथा उनके जीवन के अनुभवों और विचारधाराओ का अनादर होने लगता है जिस कारण बुजुर्ग अपने आपको हीन एवं समाज की व्यर्थ इकाई मानने लगता है। आज का युवा वर्ग टी०वी० और इन्टरनेट में ही अपनी दुनिया तलाश रहा है। उनकी मित्रता-रिश्तेदारी सब इन्टरनेट में ही सिमट कर रह गयी है। इसका परिणाम यह हुआ है कि- “अब टी०वी० की चकाचौंध में वृद्धों की बातें धुँधली पड़ गयी हैं।”२

हमारे देश के संस्कारों को ग्रहण लग चुका है। २१ वीं सदी में आधुनिक जीवन शैली और भौतिकता के कारण संयुक्त परिवार की प्रणाली नष्ट हो गयी। युवाओं में संस्कारहीनता की प्रवृत्ति परिलक्षित होने लगी। नैतिक मूल्य जर्जर हो चुके हैं। परम्परागत संस्कार पश्चिमीकरण की भेंट चढ़ गये हैं। आज अपने ही माँ-बाप हमको बोझ लगने लगे हैं। उन्हें उनके ही घर से निकालकर वृद्धाश्रम में पहुँचाने में हमें लज्जा भी नहीं आती। अपना परिवार केवल पति-पत्नी और अपने बच्चे ही रह गये हैं और माँ-बाप निरर्थक वस्तु जिसे जब चाहा निकाल फेंका। आज की युवा पीढ़ी को उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।जिससे सही विचारों का चिन्तन और मन्थन हो सके। वृद्ध विमर्श समकालीन दौर का महत्त्वपूर्ण विमर्श है। वृद्ध विमर्श एक साहित्यिक एवं सामाजिक चर्चा है जो वृद्धावस्था से जुड़ी समस्याओं, समाज में वृद्धों की स्थिति,उनके अनुभवों के महत्त्व और उनके प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने पर केन्द्रित है। यह विमर्श वृद्धावस्था की त्रासदियों, पारिवारिक उपेक्षा, अकेलापन और सामाजिक, आर्थिक समस्याओं को उजागर करता है। वृद्ध विमर्श पर केन्द्रित कुछ महत्त्वपूर्ण हिन्दी उपन्यास हैं जो इस प्रकार हैं- 'काशी नाथ सिंह' द्वारा रचित 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में परम्परागत मूल्यों एवं संस्कारों के बन्धन में जूझते हुए वृद्ध को दिखाया गया है। इस उपन्यास में रघुनाथ अपने सम्पूर्ण जीवन बच्चों की देखभाल में व्यतीत करता है किन्तु उसे बच्चों से दुःख ही प्राप्त होता है। रघुनाथ को बुढ़ापे में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है उस समय उसके बच्चे उसका साथ नहीं देते यहाँ तक कि उसकी पत्नी भी उसका साथ नहीं देती। रघुनाथ अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक अपने बच्चों के बारे में ही सोचता रहता है। 'कृष्णा सोबती' द्वारा रचित 'समय सरगम' उपन्यास में अरण्या नामक मुख्य पात्र के माध्यम से बढ़ती उम्र में किस तरह जीना चाहिए इसका चित्रण किया गया है। 'उषा प्रियम्वदा' द्वारा रचित 'गिलीगडु' वृद्ध विमर्श पर आधारित उपन्यास है जिसमें एक वृद्ध रिटायर्ड सिविल इंजीनियर जसवन्त सिंह तथा दूसरे वृद्ध रिटायर्ड कर्नल विष्णु नारायण स्वामी है जो अपनी पोतियों गिलीगडु कहकर बुलाता है जिसका अर्थ होता है-'चिड़िया का बच्चा' ये सेवानिवृत्ति के बाद जब अपने बेटा-बहू के साथ रहने आते हैं तब इन्हें उपेक्षा एवं तिरस्कार ही प्राप्त होता है। कुछ अन्य उपन्यासकारों ने भी वृद्ध विमर्श लेखन में योगदान दिया है। जैसे-गीतांजलि श्री-रेत समाधि, निर्मल वर्मा-अन्तिम अरण्य, देवेश ठाकुर-संध्या छाया, हृदयेश-चार दरवेश इत्यादि। इन उपन्यासों में वृद्धों की दुर्दशा, परिवार में उनके साथ होने वाला व्यवहार,अकेलापन और बदलते मूल्यों के सन्दर्भ में उनके आत्म-संघर्ष का चित्रण किया गया है।

गोविन्द मिश्र समकालीन साहित्यकार हैं। जिन्होंने समाज की अनेक समस्याओं पर लेखनी चलाई है। उनमें से एक महत्त्वपूर्ण समस्या है- वृद्धों की समस्या उन्होनें युवा पीढ़ी को सचेत करने के लिए अपने कई उपन्यासों में इस समस्या को उठाया है। इनके उपन्यास 'पाँच आँगनों वाला घर' में जब राजन अपनी बीमार माँ की सेवा करने के लिए उन्हें अपने घर में रखना चाहता है तब उसकी पत्नी रम्मो साफ मना कर देती है वह कहती है कि- "मैं अपने घर में मनहूसियत नहीं चाहती....चार दिन जिन्दगी के हैं और उन्हें आहें-कराहें सुनने में काट दो,उँह!" ३ यह सुनकर राजन हक्का-बक्का रह गया। अम्मा की बीमारी से मनहूसियत होगी। यही आज की पीढ़ी की सोच है। माँ-बाप की सेवा करने से उनके ऐशोआराम में खलल पड़ेगी। 'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास में अम्मा के देहान्त पर जब राजन वहाँ पहुँचता है तब राजन की भाभी ओमी कहती है-"एक बीवी का मुँह क्या देख लेता है आदमी कि पता नहीं उसे क्या हो जाता है। भूल जाता है कि कहीं कोई बहन, भैया-भाभी, माँ-बाप भी हैं।"४

मिश्र जी का उपन्यास धीरे-समीरे ब्रज यात्रा पर आधारित उपन्यास है। इस ब्रजयात्रा में अलग-अलग शहरों से अलग-अलग लोग अलग-अलग कारणों से आये हुए हैं। इस यात्रा में आयी हुई "रमा जीजी बड़े ही सम्पन्न घर से हैं।...उनकी नौ सन्ताने हैं ...किन्तु पति के मरने के बाद ...इन्हें कोई माँ मानने को तैयार नहीं सब कहते हैं तुमने और बाबू ने मिलकर फलाँ भाई को ज्यादा दिया।...अपने घर में जमकर नहीं रह सकती।...जो बच्चे वहाँ हैं वे चीन्थ डालेंगे इन्हें। बेचारी भाग-भागकर राधाबल्लभ जी की शरण आती हैं...अशरण की शरण।"५ इसी यात्रा में आयी हुई दूसरी महिला निर्मला चोपड़ा हैं जिनके दो लड़के हैं। 'एक लड़के की बहू खराब है-ऐसी किचकिच मचा देगी कि निर्मला जी चार दिन अपने लड़के के पास न रह पाएँ। दूसरे की बहू अच्छी है तो लड़का खराब है...एकदम व्यापारी।साफ कहता है कि बम्बई का घर हमारे नाम लिख दो और सारा जीवन हमारे यहाँ रहो।' निर्मला जी बिचक जाती हैं-"घर से थोड़ा कुछ मिलता है तो उससे भी हाथ झाड़कर तुम कपूतों के आसरे टँग जाओ,तुम जब चाहो बाहर फेंक दो और फिर माँगू भीख।"६

इस यात्रा में आयी हुई तीसरी महिला मंजुला बैन हैं जो मुम्बई से हैं। परिवार के लोग मंजुला को आसपास नहीं देखना चाहते इसलिए जब-तब तीरथ की तरफ ढकेल देते हैं।"रत्ना बैन ब्रजयात्रा होकर आयी तो छोटा सेठ ने उसे पकड़ा...वे किसी तरह बुढ़िया के मन में यात्रा में जाने की बात डाल दें। एक बार मंजुला बैन तैयार हो गयीं तो पैंतालिस दिनों के लिए बम्बई में शान्ति!"७

मिश्र जी का आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया उपन्यास 'कोहरे में कैद रंग' उपन्यास में वृद्धों के साथ कैसा अमानवीय व्यवहार किया जाता है, इसका चित्रण किया गया है। 'मैं' के दादा को मोतियाबिंद हुआ था जिसका ऑपरेशन न कराने के कारण वह अन्धे हो गये थे। दादा को घर के बाहर नीम के बड़े पेड़ के नीचे परछतिया में डाल दिया गया था। ...चारपाई के किनारे पानी का एक छोटा घड़ा और एक छोटी सी लुटिया रखी रहती।.... कभी-कभार घर के लोग उन्हें खाना देना ही भूल जाते तो दादा कराहते हुए अपनी पूरी ताकत लगाकर परछतिया से गुहार लगाते, "भैया रोटी न मिल्हयै का आज ?" ८ तब घर के सामने से बचाखुचा जो होता... दादा के पास पटककर चला जाता। मिश्र जी उपन्यास 'शाम की झिलमिल' वृद्ध विमर्श पर आधारित उपन्यास है। यह उपन्यास वृद्धावस्था के अकेलेपन और जिजीविषा के द्वन्द्व और टकराहट पर लिखा गया है। वृद्ध व्यक्ति अपनी पत्नी के मर जाने के बाद दोस्तों के बीच समय बिताना चाहता है किन्तु उसे जल्दी ही यह अहसास हो जाता है कि अब वह अपने मित्रों के लिए अवांछित है। वृद्ध व्यक्ति की अन्तरात्मा कहती है। "तुम्हें जिजीविषा चाहिए ...नये कालखण्ड निर्मित करो... नयी कोशिकाएँ...।"९ फिर वह अपनी पूर्वप्रेमिका के साथ बची जिन्दगी जीना चाहता है किन्तु वह कहती है-"इस उम्र में लोग क्या कहेंगे ?" १०

वृद्ध व्यक्ति अत्यन्त निराश होता है। अब वृद्ध व्यक्ति कुछ नया कार्य करना चाहता जैसे हॉस्टल खोलना,कोई समाजसेवा का कार्य करना या कोई ऐसा कार्य जिस पर वह अपना निजी योगदान दे सके। किन्तु सभी तरफ से उसे हताशा ही हाथ लगती है जिससे वह निराश वृद्ध व्यक्ति यह निर्णय लेता है कि जैसे पहले की उम्र को अलग-अलग ढंग से जिया है वैसे ही अब इस उम्र को भी जीना है,बस जीना है जैसे सब जीते हैं।

निष्कर्षत: कह सकते है कि आज वृद्धों का जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ है। आधुनिक युग की ओर आकर्षित युवा पीढ़ी अपने माता-पिता को बोझ समझ रहे हैं। माता-पिता अपनी परिस्थितियों के कारण अपने ही घर में नौकर की तरह रह रहे हैं। जिन्होंने हमारे जीवन को उज्ज्वल करने के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन को होम कर दिया उनके इस उपकार के बदले ऐसा कठोर दंड क्या यह उचित है। हमारा यह उत्तरदायित्व है कि वृद्धावस्था में अपने माता-पिता की देखभाल, सेवा-शुश्रूषा एवं उनका सम्मान करें।

सन्दर्भ:

1. होनगेकर, एस. वाय. (2018). *21वीं शदी का हिन्दी साहित्य: नव विमर्श*. एबीएस पब्लिकेशन.
2. मेकवेल, एम. (2018). *मेरी कथा: दलितयात्रा, संघर्ष और भविष्य*. वाणी प्रकाशन.
3. मिश्र, जी. (2008). *पाँच आँगनों वाला घर*. राधाकृष्ण पेपर बैक्स.
4. मिश्र, जी. (2008). *पाँच आँगनों वाला घर*. राधाकृष्ण पेपर बैक्स.
5. मिश्र, जी. (2019). *धीरे-समीरे*. वाणी प्रकाशन.
6. मिश्र, जी. (2019). *धीरे-समीरे*. वाणी प्रकाशन.
7. मिश्र, जी. (2019). *धीरे-समीरे*. वाणी प्रकाशन.
8. मिश्र, जी. (2019). *कोहरे में कैद रंग*. अमन प्रकाशन.
9. मिश्र, जी. (2017). *शाम की झिलमिल*. किताबघर प्रकाशन.
10. मिश्र, जी. (2017). *शाम की झिलमिल*. किताबघर प्रकाशन.